वीतराग शासन जयवंत हो

श्री मल्लिनाथ विधान

माण्डला

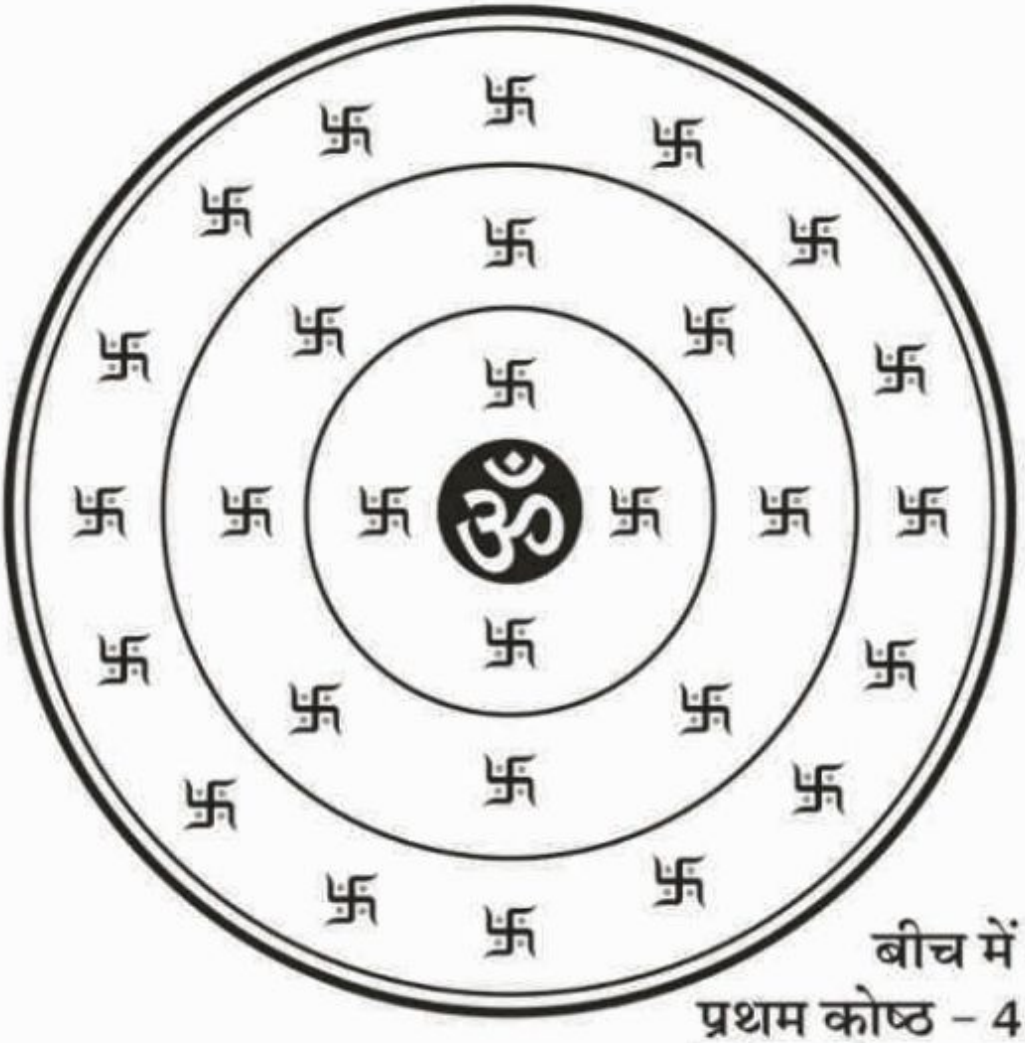

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 4 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ - 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ - 16 अर्घ्य
कुल - 28 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

श्री मल्लिनाथ स्तवन

(शम्भू-छन्द)

विमल ज्ञान में लक्षित होते, जिन महर्षि के सकल पदार्थ।
सब प्रत्यक्ष तत्त्व जगती के, विशद हुए हैं जिनको स्वार्थ।।
जिनके चरणों में तब आया, मानव देव अखिल संसार।
किया प्रणाम भक्ति युत नत हो, अंजलि बाँधे बारम्बार।।1।।
मल्लिनाथ स्वामी का पावन, कनक रूप कमनीय शरीर।
भामण्डल आभामय सुन्दर, कहता जिन्हें धीर गम्भीर।।
जिनकी वाणी तत्त्व कथन में, रही प्रबल बलवती उदार।
स्यात्पद गर्भित करने वाली, रंजित साधुवर्ग संसार।।2।।
प्रतिवादी जन जिनके आगे, होकर जग के विगलित मान।
होते शांत छोड़ के अपना, सब पाण्डित्य और व्याख्यान।।
पृथ्वी भी पाकर जिन स्वामी, का निर्मलतम पद संचार।
कमल समान रम्य बन विकसित, करती हृदय हास्य विस्तार।।3।।
हैं जिनेन्द्र जो शीत किरण शशि, तुल्य जिन्हों के चारों ओर।
शिष्य वर्ग नक्षत्रों जैसे, रहते हो आनन्द विभोर।।
जो सज्जन संसार वास में, होकर के रहते भयभीत।
सच्चे उद्धारक हैं उनके, स्वयं नाथ! जो तीर्थ पुनीत।।4।।

दोहा- अष्ट कर्म पर जय किये, मल्लिनाथ भगवान।
तुम शिवपथगामी बनें, पायें पद निर्वाण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री मल्लिनाथ विधान पूजन

स्थापना

मल्लिनाथ जी कर्म मल्ल पर, निष्पृह होके किए प्रहार।
अनन्त चतुष्टय के धारी प्रभु, हुए जगत में मंगलकार।।
हुए स्वपर उपकारी श्री जिन, दिव्य देशना दिए महान।
विशद हृदय के आसन पर हम, करते हैं जिनका आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

जो निर्मल ज्ञान सुधारस में, नितप्रति अवगाहन करते हैं।
हैं ज्ञान स्वरूपी श्री जिनवर, जो जग की जड़ता हरते हैं।।
जल का स्वभाव है शीतल शुभ, जिससे शीतलता पाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में पदार्थ जो हैं सारे, कुछ क्षण शीतलता देते हैं।
जिनवाणी के अमृत निर्झर, भव ताप स्वयं हर लेते हैं।।
जिनवर की अर्चा करते जो, अपना भव ताप नशाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठी ख्याती को भव-भव से, जग में रहके अच्छा माना।
निज आत्म ख्याति के वैभव को, हमने न अब तक पहचाना।।

जो निज स्वभाव में रमते हैं, वे अक्षय पद को पाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन के गुण सुमनों द्वारा, महके आतम का हर कोना।
जो एक बार पाले इनको, वश चाहे उन जैसा होना।।
हम काम रोग के नाश हेतु, चरणों में पुष्प चढ़ाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ध्यान अग्नि में नित नूतन, अनुभव पकवान बनाते हैं।
शुभ चिदानन्द चैतन्य सरस, रस में हम विशद पकाते हैं।।
जो भिन्न-भिन्न रस से पूरित, व्यंजन हम नित्य बनाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग मोह महातम की काली, छाया के जोर में अटका है।
मिथ्या मद से मदहोश रहा, जग पर्यायों में भटका है।।
सम्यक श्रद्धा से आलौकित, हम ज्ञान के दीप जलाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है महायज्ञ तप धर्म श्रेष्ठ, जो कर्म जलाया करते हैं।
शुभ और अशुभ से दूर हुए, निज चेतन में आचरते हैं।।

हम द्रव्य-भाव नो कर्मों की, अग्नी में धूप जलाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ-अशुभ भाव के फल सुख दुख, यह जग उनमें रत रहता है।
भव दुख की असह वेदना को, जो अज्ञानी हो सहता है।।
शुभ रत्नत्रय के तरु तल में, चेतन गुण के फल पाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो परम पारिणामिक स्वभाव, ज्ञायक होके प्रगटाते हैं।
निज ज्ञान सुधारस में रमके, शुद्धात्म स्वरूप जगाते हैं।।
अविनाशी ज्ञान शरीरी हो, अनुपम अनर्घ्य पद पाते हैं।
श्री मल्लिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करके जिन चरण, देते शांती धार।
कृपा करो सद् भक्त पर, भवदधि तारणहार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते चरण, हे त्रिभुवन के ईश !।
हमको भी निज सम करो, चरण झुकाते शीश।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(रेखता-छन्द)

चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।
धरा पर छाया मंगलकार, देव नर चरण झुकाएँ शीश।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।
प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।
महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।
ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितियायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलय:

दोहा-महिमा श्री जिनराज की, गाई अपरम्पार।
पुष्पांजलि करते चरण, नत हो बारम्बार।।

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतु:भावना

'मैत्री भाव' जगाए प्रभु जी, जग जीवों से अपरम्पार।
अत: बोलते जग के प्राणी, मल्लिनाथ की जय जयकार।।1।।

ॐ ह्रीं मैत्री भावना संयुक्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आत्म हितैषी श्रद्धालू जन, में 'प्रमोद' का भाव धरें।
रत्नत्रय निधि देकर प्रभु जी, जग जन का कल्याण करें।।2।।

ॐ ह्रीं प्रमोद भावना संयुक्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धरें आप 'कारुण्य भावना', करुणा सागर करुणाकार।
किया आपने भवि जीवों का, शिव पथगामी शुभ उपकार।।3।।

ॐ ह्रीं कारुण्य भावना संयुक्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मिथ्यावादी जीव अनेकों, करें धर्म से जो विद्वेष।
शुभ 'माध्यस्थ भावना' उनमें, धारे जिनवर मल्लि जिनेश।।4।।

ॐ ह्रीं माध्यस्थ भावना संयुक्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भावनाएँ मैत्री आदिक शुभ, विशद भाव से भाते आज।
जिनके द्वारा कर्म नाशकर, पाएँ हम भी शिव साम्राज्य।।5।।

ॐ ह्रीं चतु:भावना संयुक्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा-अतिशय धारी आप है, प्रातिहार्य संयुक्त।
अनंतचतुष्टय धर्म तप, धर हों कर्म विमुक्त।।

(अथ द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जिनगुणावली

दश अतिशय होते हैं अनुपम, जन्मोत्सव पाते जब आप।
भवि जीवों का नश जाता है, लगा हुआ मन का संताप।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्ञान कल्याणक के अवशर पर, होते दश अतिशय शुभकार।
दिव्य देशना देते जिनवर, भवि जीवों को मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दश अतिशय देवोंकृत होते, श्री जिनवर के चरण शरण।
अर्चा करने से कट जाते, भवि जीवों के जन्म मरण।।3।।

ॐ ह्रीं देवकृतातिशय प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अर्हन्त होते विशद ज्ञानी, प्रातिहार्य पाते जो अहा।
जिनकी चरण की भक्ती करना, लक्ष्य अब मेरा रहा।।4।।

ॐ ह्रीं प्रातिहार्याष्ट प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चउ कर्म घाती नाश होते, अनन्त चतुष्टय प्राप्त हों।
करते प्रकाशित द्रव्य सारे, अर्हन्त जिनवर आप्त हों।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु दोष अष्टादश रहित, होते सदा सर्वज्ञ हैं।
ध्याते जिन्हे सब जगत् जन जो, भक्त अनुपम अज्ञ हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष निवारकाय श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

उत्तम क्षमादि धर्म दश धर, कहे जिन अर्हन्त हैं।
जिनके अलौकिक विशद अनुपम, गुणों का न अन्त है।।7।।

ॐ ह्रीं दश धर्म प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप बाह्य अभ्यन्तर तपे जो, कर्म के नाशी कहें।
वे प्राप्त करते विशद ज्ञानी, सिद्धपुर वासी रहे।।8।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्हन्त की महिमा है अनुपम, नहीं जिसका पार है।
जिन भक्ति करना जगत जन को, जिन्दगी का सार है।।9।।

ॐ ह्रीं छियालिस मूलगुण सहिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा- सोलह कारण भावना, भाके मल्लिनाथ।
तीर्थंकर प्रकृति लहे, चरण झुकाते माथ।।

(अथ तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सोलहकारण भावना के अर्घ्य

आप्तागम जो रहे तपोभृत, उनमें होना सद् श्रद्धान।
दर्श विशुद्धी सर्वदोष से, विरहित शिव पद की सोपान।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना भावित श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

भव नाशक विनयभाव गाया, कांटो के जंगल नशते हैं।
हो जाए केवल ज्ञान प्रकट, फिर सिद्ध शिला पर बसते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं विनय भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

व्रत शुद्ध शील संयम धारी, निरतिचार पालने वाले हैं।
शीलांकुश से अधिकार करें, गज मन के जो मतवाले हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अनतिचार शीलव्रत भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपयोग निरन्तर चेतन के, निज ज्ञान में ही नित लगा रहे।
चैतन्य ज्ञान की धारा में, मन वच काय निज पगा रहे।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण भावना भावित श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रत भोग रोग में जीव रहें, उनसे मन जिसका हट जाए।
वस्तू स्वभाव है धर्म विशद, संवेग भाव यह कहलाए।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना भावित श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्व परोपकार के हेतु विशद, जो वस्तू का परित्याग कहा।
शक्तिस्तस त्याग भावना का यह, आगम में उल्लेख रहा।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तिस्तस त्याग भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आभ्यन्तर बाह्य सुतप धारी, योगीश्वर निज का ध्यान करें।
तप धारण कर जो कर्म नाश, करके निज का कल्याण करें।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तिस्तस तपभावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं संत साधना के धारी, निज में उपयोग लगाते हैं।
षट् कर्मों का पालन करते, वे साधु समाधी पाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आत्म साधना करने वाले, की बाधाएँ हरते हैं।
वैय्यावृत्ती तप है अनुपम, ज्ञानी जन जो करते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हैं कर्म घातिया के नाशी जिन, केवल ज्ञान प्रकाश करें।
अर्हद् भक्ती भव्य भावना, करके गुण में वास करें।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हद् भक्ति भावना भावित श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जो छत्तिस मूलगुणों के धारी, पालन करते पंचाचार।
है आचार्य की भक्ति पावन, करते हैं हम बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी उपाध्याय गुणवान।
बहुश्रुत भक्ती जग कल्याणी, करते हैं हम महिमावान।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दिव्य देशना श्री जिनेन्द्र की, कहलाए प्रवचन शुभकार।
बहुश्रुत भक्ती भावना करते, होने को भवदधि से पार।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

समता स्तुति और वन्दना, प्रतिक्रमण स्वाध्याय प्रधान।
कायोत्सर्ग आवश्यक पालें, आवश्यक अपरिहार्य महान।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणी भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जिन पूजा जिनबिम्ब प्रतिष्ठा, रथयात्रा जप तप हो दान।
हो प्रभावना जिन शासन की, है प्रभावना अंग महान।।15।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना भावित श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सत्पथगामी सद्भक्तों में, हो वात्सल्य का भाव प्रधान।
प्रवचन वात्सल भव्य भावना, कहलाए अति महिमावान।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, भव्य भावनाएँ शुभकार।
तीर्थंकर प्रकृति में कारण, भाएँ प्राणी बारम्बार।।
भव्य भावना भाते हैं जो, तीर्थंकर पद पाएँ महान।
यह संसार असार छोड़कर, प्राप्त करें वे शिव सोपान।।17।।

ॐ ह्रीं षोडश कारण भावना भावित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- मल्लिनाथ जिनराज पद, पूजे मन वच काय।
जयमाला गाते यहाँ, पाने मोक्ष साम्राज्य।।

(छन्द पद्धड़ि)

जय-जय जिनवर श्री मल्लिनाथ, तव चरण झुकाए भक्त माथ।
प्रभु अपराजित से चये आप, सब करें आपका नाम जाप।।
मिथलापुर में जन्मे जिनेश, सुर रत्न वृष्टि कीन्हे विशेष।
है पिता आपके कुम्भराय, जिन मात प्रजापति जी कहाय।।1।।

शुभ स्वर्ण रंग तन का प्रधान, सौ हाथ तुंग जिनवर महान।
जय गर्भ जन्म तप धर जिनेश, तप ज्ञान मोक्ष मण्डित विशेष।।
प्रभु प्रातिहार्य चौंतीस वान, वसु प्रातिहार्य पाए महान।
शुभ अनन्त चतुष्टय आप धार, प्रभु मोक्ष मार्ग का दिए सार।।2।।
हैं दोष अठारह रहित आप, जगज न करते तव नाम जाप।
प्रभु कर्म घातिया किए नाश, जो ज्ञान विशद कीन्हे प्रकाश।।
तव समवशरण रच ना प्रधान, आ देव किए अतिशय महान।
शुभ दिव्य देशना ॐकार, दीन्हे जिनवर जी तरण हार।।3।।
शत इन्द्र अर्चना करें आन, जो करते प्रभू का गुणोगान।
श्री जिनवर जी करके विहार, सम्मेद शिखर जा योग धार।।
प्रभु अपने सारे कर्म नाश, जो सिद्ध शिला पर किए वास।
है सम्बल कूट अतिशय महान, प्रभु का गाया निर्वाण थान।।4।।
हम भी पाएँ शुभ मोक्ष पंथ, अब छूट जाय सारा सग्रन्थ।
जिनको हम ध्याते बारबार, नत होके करते नमस्कार।।

दोहा- संयम धारे मल्लि जिन, किए कर्म का नाश।
हम भी शिव पथ पर बढ़े, पाए शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भक्ती कर मुक्ती मिले, पावन संयम धार।
शिवपद पाने को 'विशद', वन्दन बारम्बार।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री मल्लिनाथ चालीसा

परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।
मल्लिनाथ जिनराज पद, विनत झकुाते माथ।।

(चौपाई)

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए।।1।।
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी।।2।।
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए।।3।।
मिथला के नृप कुम्भ कहाए, प्रजावती के गर्भ में आए।।4।।
इक्ष्वाकू नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।।5।।
अश्विनी श्रेष्ठ नक्षत्र बताए, प्रातःकाल का समय कहाए।।6।।
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभु मल्लि जिन पाए।।7।।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई।।8।।
तड़ित़ देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।।9।।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए।।10।।
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।।11।।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते।।12।।
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।।13।।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया।।14।।
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।।15।।
वैशाख कृष्ण दशमी को भाई, प्रभु ने जिनवर दीक्षा पाई।।16।।
पौर्वाह्न काल का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभू ने पाया।।17।।

शाली वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी ।।18।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए ।।19।।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया ।।20।।
पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभु की शुभ आयु बतलाई ।।21।।
गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख जी पहले गाए ।।22।।
साढे पाचँ सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी ।।23।।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए ।।24।।
उन्तिस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी ।।25।।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्यज्ञानी बतलाए ।।26।।
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई ।।27।।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालिस सहस्र मुनी सब गाए ।।28।।
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए ।।29।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो ।।30।।
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ती पद शुभ पाया ।।31।।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूली बेला मनहारी ।।32।।
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी ।।33।।
महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी ।।34।।
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें ।।35।।
यशःकीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांती उपजावें ।।36।।
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें ।।37।।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होवें आज्ञाकारी ।।38।।
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण-शरण में हम भी आएँ ।।39।।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री मल्लिनाथ भगवान की आरती

हम तो आरती उतारे जी, मल्लिनाथ जिनवर की-हो ।
जय-जय श्री मल्लिनाथ, जय-जय हो-हम...।।टेक।।
माँ प्रजावती के लाल, कुंभ नृप के प्यारे।
प्रभु छोड़ के जगत् जंजाल, संयम को धारे।
लिए मिथिला नगर अवतार, स्वर्ग से चय कीन्हे।
आओ मंदिर में दौड़-दौड़, हाथों को जोड़-जोड़। हो..।।1।।
प्रभु वीतराग जिनराज, करुणा के धारी।
हम करें आरती आज, प्रभु की मनहारी।
मिले हमको सौख्य अपार, प्रभु की भक्ति से।
आओ मंदिर में डोल-डोल, हृदय के पट खोल-खोल। हो...।।2।।
नई जीवन में आये बहार, जिन गुण गाने से।
मिले मुक्ति की शुभ राह, दर्शन पाने से।
'विशद' मिलता है आनन्द अपार, चरणों आने से।
आओ दर्शन को देख-देख, माथा को टेक-टेक। हो..।3।।